वड्डी वड्डाई सामी जाणु भगति जी,
नीच ऊच थिया केतिरा, करे कमाई,
ढेढ चमार जुलाहा, पेञारा नाई,
जनीं लिंव लाई, से सभेई सुधिरिया.

भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं, ''हे मनुष्य ! तुम यह जान लो कि भक्ति की बड़ी महिमा है। परमेश्वर की भक्ति करने से ही अनेक निम्न जाति के लोग उच्च बन गये। यह कमाई, यह फल उन्हें भक्ति द्वारा ही मिला है। ढ़ेंढ/डोम, जुलाहा, धुनियाँ और नाई जाति के लोगों ने भी प्रभु से बहुत प्रेम किया, भक्ति की और वे सब के सब सुधर गये, उनका जीवन सफल हो गया तथा उन्हें मुक्ति मिली।

आत्म-प्राप्ति या परमेश्वर को पाने के लिए भक्ति एक महत्वपूर्ण साधन है। परमेश्वर से अनन्य प्रेम ही भक्ति है। भगवान का स्मरण, राम-नाम जपना भक्ति है। नाम-रूपात्मक उपासना' भक्ति-मार्ग' के नाम से पहचानी गयी और फिर यह 'भागवत धर्म' के नाम से प्रसिद्ध हो गयी। भक्ति करने का अधिकार सबको है। अर्थात् किसी भी वर्ण या जाति का मनुष्य भक्ति कर सकता है। भारत के महान संतों ने भक्ति को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत् कार्य किया है। बड़े-बड़े संतों से लेकर समाज के निम्न स्तर के लोगों ने भक्ति मार्ग को अपनाया है। एकनिष्ठ भक्त अपना जीवन सफल कर गये हैं। भक्ति हृदय का सौदा है, जहाँ स्वार्थ का कोई स्थान नहीं हैं। समर्पण का भाव ही भक्ति के लिए अनिवार्य तत्त्व है। भक्ति-रस, भक्ति का आलौकिक आनंद केवल अनन्य/एकनिष्ठ भक्त ही प्राप्त कर सकता है।

सामी साहब ने भक्ति की महिमा पर बहुत श्लोक रचे हैं। उपर्युक्त श्लोक में भी भक्ति की महिमा और उसकी एक विशेषता वर्णन है। मोक्ष/मुक्ति प्रदान करने वाली भक्ति संसार का कोई भी मनुष्य कर सकता है। चाहे कोई राजा हो रंक, उच्च वर्ण वाला हो या निम्न जाति का, छोटा-बड़ा, नर-नारी आदि सभी भक्ति करने के अधिकारी हैं। सामी साहब उदाहरण देते हैं कि नामदेव (दरजी), कबीर (जुलाहा), सेना (नाई), नरहरी (सुनार), तुकाराम (कुनबी), सावता (माली) और कान्होपात्रा (गणिका) आदि ने भक्ति करके अपना जीवन सफल कर दिया। भक्ति के क्षेत्र में जात-पात को कोई स्थान नहीं ह। आवश्यक है प्रभु के प्रति प्रेम!

सुमिरन मारग सहज का, सतगुरु दिया बताय।
साँस साँस सुमिरन करनं, एक दिन मिलसी आय।।

■